उत्तराधिकारी

राजेन्द्र लहरिया

उत्तराधिकारी

(लघु उपन्यास)

राजेन्द्र लहरिया

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: अप्रैल, 2026

© *राजेन्द्र लहरिया*

उत्तराधिकारी

[ख़ानदानी कुटिलता-क्रूरता-निर्ममता की विरासत-कथा]

मंच पर पहुँचते ही क़िस्सागो ने सबसे पहले श्रोताओं का अभिवादन किया; उसके बाद कहा - हाज़िरीन! जिस तरह मनुष्य के वजूद के लिए उसके सिर- आँख- नाक- कान- हाथ- पाँव का होना ज़रूरी होता है, जिस तरह साँप के अस्तित्त्व के लिए उसके फण- पूँछ का होना ज़रूरी होता है, जिस तरह सिंह के होने के लिए उसके शरीर के साथ ही दहाड़ का होना ज़रूरी होता है; उसी तरह किसी क़िस्से के होने के लिए उसमें वर्तमान, भूत और भविष्यत का होना ज़रूरी होता है!… तो आज एक ऐसा ही क़िस्सा लेकर मैं आपके सामने हाज़िर हुआ हूँ जिसमें वर्तमान भी है और भूत-भविष्यत भी!... बहरहाल, पेश करता हूँ यह क़िस्सा, जिसका उन्वान है ‘उत्तराधिकारी’ :

[1]

वह इक्कीसवीं सदी के इक्कीसवें बरस की आखिरी तिमाही के एक दिन की एक दोपहर थी, जिसमें जटाराम अपने ऑफिस-कक्ष में मौजूद था - अपनी कुर्सी पर। वह उस वक्त किसी का इंतजार कर रहा था।

थोड़ी देर में कक्ष के डोर पर दो बार नॉक करने की आवाज हुई। एक खास तरीके व अंतराल से दो बार नॉक किया जाना, आने वाले की पहचान बन चुका था जटाराम पाण्डे के लिए। इसलिए उसने फौरन कहा, “आ जाइए!”

उसके ‘आ जाइए!’ कहने के साथ ही दरवाजे का पल्ला आहिस्ता से खुला; और उसमें से नंदलाल ने प्रवेश कर पल्ले को पुन: पूर्ववत् बंद किया और वे चल कर जटाराम पाण्डे की कुर्सी के सामने मौजूद शानदार- विशालाकार टेबिल के इधर पड़ी कुर्सियों में से ठीक जटाराम के सामने पड़ती कुर्सी पर बैठ गये।

उनके बैठते ही जटाराम ने टेबिल पर रखी कॉल-बेल के स्विच पर उँगली रखी।

उसके फौरन बाद एक लड़का दरवाजे से सिर्फ निकल पाने योग्य जगह बना भीतर आकर खड़ा हो गया।

जटाराम ने उसकी तरफ दो उँगलियाँ सीधी उठा कर कहा, “दो कॉफी!”

लड़का ‘जी सर!’ कह कर वापस चला गया।

उसके बाद जटाराम पाण्डे ने नंदलाल की ओर देखा; फिर अत्यन्त धीमी आवाज में कहा, “बताइए, क्या प्रोग्रेस है?”

नंदलाल के चेहरे पर मामूली तनाव था, “वैसे तो वे तैयार हैं; पर उनको प्रॉब्लम इस बात से है कि सीएम चीफ गेस्ट होंगे!...”

जटाराम पाण्डे ने नंदलाल की बात पूरी होने से पहले ही कहा, “इसमें उनको क्या प्रॉब्लम है?... ये तो हम तय करेंगे कि कौन चीफ गेस्ट होगा, कौन अध्यक्ष!... उनको अध्यक्षता दे तो रहे हैं?... फिर प्रॉब्लम क्यों?”

“आइडियोलॉजी!” नंदलाल ने तंजिया लहजे में कहा, “बात वही है कि गुड़ खायेंगे, पर गुलगुलों से परहेज करेंगे!”

“उनको बता दिया था कि उनके ठहरने-खाने-पीने की व्यवस्था ‘फाइव स्टार’ में रहेगी? और आने-जाने घूमने के लिए टैक्सी रिजर्व रहेगी?” जटाराम पाण्डे ने सवालिया होकर नंदलाल की ओर देखा।

“हाँ, वह सब बता दिया था!... फिर भी नखरेबाजी!...” नंदलाल ने अपनी कोफ्त प्रदर्शित की।

इस बीच लड़का आकर कॉफी के दो मग टेबिल पर रख कर लौट गया।

जटाराम पाण्डे चंद पलों तक चुपचाप नंदलाल की तरफ देखता रहा; फिर उसने कॉफी का मग उठाते हुए दूसरे मग की ओर इशारा कर नंदलाल से कहा, “लीजिए, कॉफी लीजिए!”

नंदलाल ने टेबिल से मग उठा लिया।

दोनों कुछ देर तक चुपचाप कॉफी सिप करते रहे।

फिर जटाराम ने नंदलाल की ओर गहरी निगाहों से देखते हुए कहा, “नंदलाल जी, इस आदमी की हकीकत क्या है?... आप तो इस आदमी को बहुत पहले से जानते होंगे।... मेरा मतलब है यों तो उन्हें सभी जानते हैं; पर आप तो अपने कार्यकाल में उनको बुलाते भी रहे होंगे।... तो आपको क्या नजर आया था?... आइडियोलॉजिकली कितना पक्का है यह आदमी?”

“हाँ, बुलाया था अनेक बार! साक्षात्कार किये कई बार!” नंदलाल ने कहा, “बात वही है, हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और!”

नंदलाल केन्द्रीय शासन के अधीन कल्चर-संबंधी एक विभाग में उच्च पद पर कार्यरत रहे थे। उस दौरान कला, साहित्य व संस्कृति के क्षेत्र के बड़े व नामी लोगों के साथ उनका वास्ता रहता आया था। विभाग से रिटायर्ड होने के बाद कुछ समय तक वे घर पर रहे; किंतु घर पर बिना काम के बैठना उन्हें रास नहीं आ रहा था। तो कुछ समय बाद वे जटाराम पाण्डे के संस्थान से जुड़ गये थे। साहित्य-कला-संस्कृति क्षेत्र के नामी